संस्थापक एवं सम्पादक-एक परिचय

डॉ. कृष्णबीर सिंह का जन्म 04 फरवरी सन् 1960 को भारत के हरियाणा राज्य के गाँव-खेड़ी, जिला महेन्द्रगढ़ में, चौहान वंशीय राजपूत जाति में हुआ। आपके पिताजी भारतीय सेना की राजपूत रेजिमेन्ट में सेवारत थे एवं कैप्टन पद प्राप्त कर सेवानिवृत्त हुए। माताजी गृहणी हैं।

हायर सैकण्डरी गुरु गोविन्दसिंह उच्च माध्यमिक विद्यालय-चेतक सर्कल, उदयपुर से उत्तीर्ण करने के उपरान्त आप भी भारतीय सेना की विद्युत एवं यान्त्रिक शाखा में चले गये। सेना में रहते हुए आपने स्नातक एवं स्नातकोत्तर (हिन्दी साहित्य) परीक्षा उस्मानिया विश्वविद्यालय, हैदराबाद (आन्ध्रप्रदेश) से प्रथम स्थान प्रथम रहकर उत्तीर्ण की। कानून की शिक्षा राँची विश्वविद्यालय राँची (झारखण्ड) एवं बी.एड. की उपाधि महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक (हरियाणा) से प्राप्त की। चूँकि आपका रुझान अध्ययन एवं शोध की तरफ अधिक था अत: आपने पी-एच.डी. उपाधि हेतु राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर (राजस्थान) से अज्ञात कवि देवर्षि जगदीश भट्ट के हस्तलिखित ग्रन्थों पर शोध पूर्ण किया एवं हिन्दी साहित्य में उक्त उपाधि प्राप्त की।

17 वर्षों की सेना सेवा के पश्चात् आप अध्यापन के क्षेत्र में आ गये तथा फिलहाल आप जयपुर के एकमात्र हैरिटेज कॉलेज-**एस.एस.जी. पारीक (पी.जी.) कॉलेज** में हिन्दी विभागाध्यक्ष पद पर सेवारत हैं। हिन्दी साहित्य, इतिहास, भारतीय संस्कृति, दर्शन एवं मानवाधिकार आदि विषयों के गहन अध्येता डॉ. कृष्णबीर सिंह की हिन्दी एवं विविध विषयों की लगभग 20 पुस्तकें एवं बाल साहित्य एवं विविध विषयों से सम्बन्धित दो दर्जन पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। साहित्यिक एवं शोध पत्रिकाओं के सम्पादक के रूप में कार्य करते हुए सौ से भी अधिक विविध विषयों की पुस्तकों की समीक्षाएँ प्रकाशित हो चुकी हैं। आपने अनेकों राष्ट्रीय संगोष्ठियों में शोध पत्रों का वाचन किया है। आप राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर से हिन्दी साहित्य में शोध निर्देशक रूप में मान्यता प्राप्त हैं। विभिन्न छात्रों ने आपके निर्देशन में पी-एच.डी. उपाधि प्राप्त कर ली है एवं अनेकों शोधार्थी आपके निर्देशन में शोधरत हैं। प्राचीन ग्रन्थों के गहन अध्येता एवं बहुमुखी प्रतिभा के धनी डॉ. सिंह हिन्दी, पंजाबी, हरियाणवी, राजस्थानी, ब्रज एवं अंग्रेजी भाषा पर अधिकार रखते हैं तथा हस्तरेखा, सुजोक (एक्यूप्रेशर) एवं मनोविज्ञान के विशेषज्ञ के रूप में ख्याति प्राप्त हैं। शिक्षा जगत की अन्तिम उपाधि 'डी. लिट्' हेतु आप के.एम. मुंशी हिन्दी एवं भाषा विज्ञान संस्थान, आगरा विश्वविद्यालय, आगरा से भाषा विज्ञान पर शोध कर रहे हैं।

आपने अपनी जिजीविषा से 'शोध, समीक्षा और मूल्यांकन' पत्रिका का प्रकाशन प्रारम्भ किया है जो पूर्णत: अव्यवसायिक है एवं शोधार्थियों के उज्ज्वल भविष्य हेतु सहृदयता पूर्वक समर्पित है। यद्यपि आप इस शोध पत्रिका के संस्थापक एवं सम्पादक हैं किन्तु शोध पत्रिका की सफलता का सम्पूर्ण श्रेय प्रकाशन व्यवस्थापक श्रीमती उषा सिंह (पत्नी) एवं अपने समस्त शिक्षक साथियों, शोधार्थियों एवं मित्रों को देते हैं।

स्पष्टवक्ता एवं सहयोग की भावना से परिपूर्ण डॉ. सिंह 'कर्म ही धर्म है' में श्रद्धा एवं विश्वास रखते हुए सभी की प्रसन्नता एवं विकास में स्वयं का बिम्ब देख प्रफुल्लित होते हैं।